रोटी की जुगाड़ में पिसते बच्चे

वीणा चौहान

हमारे मौहल्ले में चौका-बर्तन करने जो औरत आती है उसके साथ उसकी 10-11 वर्ष की बेटी भी आती है। खेलने-कूदने व पढ़ने की उम्र में उसे अपनी मां के साथ चौका-बर्तन करते देख मेरा मन दुखी हो उठता था। क्या भविष्य होगा ऐसी अशिक्षित गरीब बच्ची का। एक दिन मैंने उसकी मां से पूछ लिया कि लक्ष्मी को स्कूल क्यों नहीं भेजती हो? मेरे इस सवाल से जो बातचीत उपजी वह इस तरह थी—

तुम्हारे मौहल्ले में कोई स्कूल है?

जी है। सरकारी स्कूल है और एक प्राइवेट स्कूल भी।

तुमने लक्ष्मी को पढ़ने क्यों नहीं भेजा?

पिछले साल दाखिल कराया था। कुछ महीने वह बराबर गई, लेकिन बाद में उसने जाना बंद कर दिया।

क्यों बंद कर दिया?

बात ऐसी है कि जो सरकारी संस्था गरीब बच्चों के लिए स्कूल चलाती है, उसे सरकार की ओर से दलिया, गुड़, घी, तेल, साबुन, पेस्ट व दवाइयां मिलती हैं। शुरू में एक-दो महीने तो मास्टरनी बच्चों को थोड़ी-बहुत चीजें देती रहती है, उनके लालच में बच्चे रोज स्कूल जाते रहते हैं। धीरे-धीरे ये चीजें गायब होने लगती हैं। दलिये में गुड़-घी नदारद हो जाता है। तेल, साबुन, दवाई कुछ भी मांगें तो टाल दिया जाता है। पढ़ाई भी अनमने ढंग से कराई जाती है। जल्दी छुट्टी कर दी जाती है या बिल्कुल ही छुट्टी कर दी जाती है। प्राइवेट स्कूल में फीस ज्यादा है जो हम गरीबों के बस की बात नहीं।

सब मिलकर शिकायत क्यों नहीं करते?

कुछ लोगों ने कई बार लिखित में बड़े अफसर को शिकायत की, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। मास्टरनी जी कहती हैं कि अफसर बच्चों के लिए आई चीजें स्वयं हड़प कर लेते हैं।

अंत में उसने एक बात दबी जुबान से बताई कि स्कूल में हरिजनों के बच्चों को भी साथ बैठाकर खिलाया जाता है, जबकि अन्य लोगों का कहना है कि उन्हें अन्य बच्चों से अलग बैठाया जाए और उनके बर्तन अलग रखे जाएं। पढ़ाई के पीछे वे अपना धर्म थोड़े भ्रष्ट करेंगे। इन्हीं कारणों से मैंने अपनी लड़की की पढ़ाई छुड़वा दी। वह पढ़-लिखकर क्या करेगी। मेरे साथ काम करेगी तो दो पैसे कमाना सीख जाएगी।

झूठा डर

उसका अंतिम तर्क सुनकर तो मैं चौंक उठी। बच्चे अशिक्षित रह जाएं, पर वे हरिजनों के बच्चों के साथ नहीं बैठेंगे। धर्म भ्रष्टता का झूठा डर बच्चों को असुरक्षित भविष्य की ओर धकेल रहा है।

योजना और कार्यक्रम बना देना ही काफी नहीं, सही लोगों को लाभ पहुंच रहा है या नहीं यह देखना भी आवश्यक है। एक स्कूल के माध्यम से ही समझा जा सकता है कि हमारे समाज में भ्रष्टाचार की जड़ें कितनी गहरी चली गई हैं। जब तक भ्रष्टाचार खत्म नहीं होगा और सामाजिक चेतना जाग्रत नहीं होगी तब तक गरीब बच्चों को सुरक्षित भविष्य देना

मुश्किल बात है। पर यदि पूरा मौहल्ला स्कूल में हो रही धांधली के खिलाफ उठ खड़ा हो तो प्रशासन पर कुछ न कुछ असर जरूर होगा।

11 वर्ष की मीना, 8 वर्ष के मुरारी और 10 वर्ष की प्रेम की समस्या भी कुछ इसी तरह की है।

बकरी चराती मीना से मैंने पूछा—
"तुम्हारे मां-बाप क्या करते हैं?"
"बाप नहीं है, मां मजूरी करती है।"

"तुम पढ़ने क्यों नहीं जातीं?"
"हम गरीब हैं, पढ़ कैसे सकते हैं?"

"बकरी चराकर कितना कमा लेती हो?"
"50 रुपये महीना।"

मुरारी छः सात वर्ष का था जब स्कूल जाने लगा। एक दिन मास्टर जी ने किसी बात पर मुरारी की जोरदार पिटाई करदी। तब से जो उसने स्कूल जाना छोड़ा आज तक नहीं गया। न मास्टर जी को किसी ने समझाया, न मुरारी को।

प्रेम और छोटी बहिन साथ में प्लास्टिक, लोहा, शीशी बीनती चलती हैं। 1-2 रुपया रोज वे भी कमा लेना चाहती हैं।

बच्चों की गरीबी, अशिक्षा और अवैध बालश्रम संबंधी समस्याएं मां-बाप की गरीबी के कारण ही नहीं हैं, बल्कि सरकारी योजनाओं को ठीक तरह लागू न करना या करोड़ों रुपयों की योजनाओं का उन बच्चों तक न पहुंचाना भी है जिनके नाम पर योजनाएं बनती हैं।

जवाहर रोजगार योजना हो या पंचायती राज में सुधार, वे प्रशासन की बेरुखी और अफसरों के निहित स्वार्थों की वजह से गरीब तबके तक नहीं पहुंच पाती हैं। जरूरत है स्वयं-सेवी संस्थाओं की जो इन योजनाओं में सक्रिय सहयोग दे सकें। इसकी ज्वलंत मिसाल है स्वामी अग्निवेश का—"बंधुआ मुक्ति मोर्चा।" कानून इस समस्या से उतना नहीं जूझ पाया या समाज के सामने नहीं ला पाया जितना मुक्ति मोर्चे ने उजागर किया। इस मोर्चे ने समूचे देश में बंधुआ-मजदूरी के खिलाफ जिहाद-सा छेड़ रखा है। इसी तरह के कुछ अन्य मोर्चे जब समाज में शुरू हो जाएंगे तभी सरकारी योजनाओं का लाभ उठाया जा सकेगा। □

नारी का क्या है नारा
जायजाद पे हक हो हमारा

जिस देश में औरत बिकती है
उस देश का भट्टा बैठेगा